भजन

रूहों के श्याम श्यामा अंग संग,झलकत झलकत नूरी अंग

1–चौंसठ थंभ है ऊपर चन्द्रवा,मूलमिलावे का है नूरी जलवा
सिहांसन की ज्योत करती रोसन झिलमिल
हीरे मोति माणिक नंग

2–तीजी भोम की जो पड़साल,ठौर बड़े बड़े दरवाजे विशाल
धनी आवत हैं उठ प्रात,वन सींचत अमृत अघात
पसु पंखी का मुजरा लेवें देवें
मस्त निगाहों से दिए दर्शन

3– सैंया आवत करें झनकार,पांव भूखण भोम ठमकार
झलकतियां रे मलपतियां सखियां
सदा आनन्द इन वतन

4– कई फलंग दे उच्छलियां,कई फूल लता जो फिरतीयां
कई हौले हौले हौलतीयां,कई मालतियां मचकतियां
कई आवत हैं ठेलतियां संखियां
रंग रस में डूबे सभी के मन

5– इत और न दूजा कोई,सरूप एक है लीला दोई
युगल सरूप का दर्शन पाकर हो गए
सखियों के पुलकित अंग